श्री शिवकृपानंद स्वामी

॥ जय बाबा स्वामी ॥

'समर्पण भवन', एरु - अब्रामा रोड, गाँधी स्मृति स्टेशन के पास (पश्चिम), एरु,
जिल्ला - नवसारी, गुजरात - 396450, भारत. फोन : 02637 - 324755 / 09328810888
Website : www.samarpanmeditation.org

।। वसुधैव कुटुंबकम् ।।

ॐ

महाशिवरात्री
12 - 2 2018

❀ नमन ❀

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार - - - - - -
आज "महाशिवरात्री" के दिन हमारा १२ गहन ध्यान अनुष्ठान का समापन हो रहा है, आज आपको एक "सत्य" बताने का मन कर रहा है, एक महान कार्य करने के लिये एक अतीमहान पवीत्र शरीर की आवश्यकता होती है, अतः पवीत्र शरीर प्राप्त करने के लिये अत्यन्त पवीत्र "गर्भ" प्राप्त होने की भी आवश्यकता होती है, मुझे ऐसा पवीत्र "गर्भ" को मिलने मे ८०० साल तक इंतजार करना पडा है, इस लिये सर्व प्रथम मैं मेरे "माता पीता" को सर्व प्रथम "नमन" करता हु। जिनके कारण मुझे यह शरीर प्राप्त हो सका है, गुरुशक्तीयो की प्रार्थना से ही यह कार्य हो सका इस लीये गुरुशक्तीयो को भी "नमन" करता हु, बाद मे श्री शिवबाबा को "नमन" करता हु जिन्होने यह इतना बडा गुरुकार्य इस स्थुल शरीर को सौंपकर मुझे एक अधीकृत "माध्यम" बनाया था,

Scanned by CamScanner

श्री शिवकृपानंद स्वामी
' समर्पण भवन ' , एरु - अब्रामा रोड, गाँधी स्मृति स्टेशन के पास (पश्चिम), एरु,
जिल्ला - नवसारी, गुजरात - 396450, भारत. फोन : 02637 - 324755 / 09328810888
Website : www.samarpanmeditation.org
।। वसुधैव कुटुंबकम्।।

एक "बीज" से "वृक्ष" बनाने वाली माली "गुरु माँ" को नमन करता हु। किसी भी "माध्यम" का शरीर त्याग देने पर ही 25-30 साल के बाद सुक्ष्म शरीर का कार्य प्रारंभ होता है।

श्री शिवबाबा ने तीन दिन तक समाधी अवस्था मे रख कर समस्त शरीरभाव को ही समाप्त कर दिया। और बराबर उस घटना के 30 साल के बाद "सुक्ष्म शरीर" का कार्य प्रारंभ हुआ। फिर एक दांडी आश्रम के ही बाद मे अनेक आश्रम हो गये और कार्य विस्तार होने लगा। और साथ२ साधको विशेष रुप से साधीकाओ को एक अनुभुतीया होने लग गयी कारण था साधको का पुरुष का "अंहकार" आडे आता था। जो जिवन्त शरीर के सामने प्रार्थना करने मे आडे आता था, फिर प्रत्येक को अनुभुतीया का अनुभव होने लगा की "संपुर्ण भाव" के साथ अगर हम प्रार्थना को करते है, तो वह सफल हो जाती है, अब यह कैसे होने लगा। समझ लो एक शरीर का "माध्यम" है, जिसका स्थुल शरीर का भाव पुर्णतह समाप्त हो गया हो और फिर 30 साल के बाद सुक्ष्मशरीर भी क्रीयान्वीत हो गया हो वास्तव मे "सुक्ष्मशरीर" का अस्तीत्व तो ऐसा होता है, मानो एकदम खाली पाईप एक दम रिक्त सा वह तो "परमात्मा मय" ही हो जाता है,

श्री शिवकृपानंद स्वामी

' समर्पण भवन ' , एरु - अब्रामा रोड, गाँधी स्मृति स्टेशन के पास (पश्चिम), एरु,
जिल्ला - नवसारी, गुजरात - 396450, भारत. फोन : 02637 - 324755 / 09328810888
Website : www.samarpanmeditation.org

॥ वसुधैव कुटुंबकम् ॥

मनुष्य ने "परमात्मा" को तो देखा नहीं है, पर इस "माध्यम" को तो देखा है, तो वे "माध्यम" को भी प्रार्थना करते है, वह सीधी "परमात्मा" तक ही पहुंच जाती है, क्योंकी "माध्यम" तो "परमात्मामय" हो जाता है, उसका "परमात्मा" से अलग अस्तीत्व नहीं होता है, यह गुरुशक्तीयो के योग मे प्रथमबार हुआ है, की "माध्यम" का उसके ही जिवनकाल मे "सुक्ष्म शरीर" भी क्रियान्वीत हो गया हो लेकीन फिर भी जब "माध्यम" का स्थुलशरीर है, तबतक तक वह "दिवार" सा है, इस स्थुल शरीर के पार सुक्ष्मशरीर तक बहुत कम ही लोग पहुंच पायेंगे, लेकीन जिस दिन यह स्थुलशरीर "समाधीस्थ" होगा, यह स्थुल शरीर की दिवार भी गीर जायेगी और सुक्ष्म शरीर साफ साफ नजर आने लगेगा। शरीर की दिवार गिर जाने से "माध्यम" विश्व के सभी आत्माओ को पास से निकटता से अनुभव होने लगेगा। जिवन्त मनुष्य तो अब रहा नहीं तो जो पुरुष पहले "प्रार्थना" से जुड नहीं पाते थे वे भी अब जुडने लगेंगे "माध्यम" के जिवनकाल मे तो अधीकतर साधीकाएं ही प्रार्थना से जुड पायेगी क्योंकी उनमे "भाव" अधीक होता है, जिवनकाल मे "गुरुकार्य" भी अधीकतर साधीकाओ से ही होगा,

Scanned by CamScanner

श्री शिवकृपानंद स्वामी

' समर्पण भवन ' , एरु - अब्रामा रोड, गाँधी स्मृति स्टेशन के पास (पश्चिम), एरु,
जिल्ला - नवसारी, गुजरात - 396450, भारत. फोन : 02637 - 324755 / 09328810888
Website : www.samarpanmeditation.org

।। वसुधैव कुटुंबकम्।।

(4)

मेरे गुरुदेव ने "सत्य" ही कहा था। तेरे कार्य का विस्तार तेरे "समाधीस्थ" होने के बाद ही प्रारंभ होगा- क्योंकी जब तक लोगो का देहभाव छुटता नहीं हैं, तब तक सुक्ष्म से जुडा नहीं जा सकता हैं, तु स्थुल मे होकर भी "सुक्ष्म" मे होगा- लेकीन लोग तो "स्थुल मे ही होगे" वे जबतक स्थुलशरीर भाव से मुक्त नहीं होते वे तेरे जिवन काल मे तुझसे जुड ही नहीं सकते हैं, स्थुल शरीर छुट जाने के बाद सारी शरीर की सिमाऐ समाप्त हो जाती हैं, और फिर कार्य करने मे एक प्रकार की स्वतंत्रता अनुभव होती हैं, और फिर कार्य का विस्तार भी बहुत होता हैं, बाद मे "जाती, धर्म, देश, भाषा, इनसब सीमा तोडकर भी पवीत्र आत्माऐ खिंची चली आती हैं, क्योकी तब "माध्यम" माध्यम नहीं होता- "परमात्ममय" हो जाता हैं, बहुत ही कम लोग होते हैं, जो "माध्यम" के जिवनकाल मे उससे "सुक्ष्म" मे जुड पाते हैं, आप सभी को खुब खुब आशीर्वाद.

आपका
बाबा स्वामी
13/2/2018

Scanned by CamScanner